RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-06
June-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i06.014

भारत की बदलती विदेशी नीति (लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट की ओर)

डॉ. चन्द्रदीप नंदलाल यादव

राजनीति विज्ञान विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15June 2020

Keywords
भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक परम्पराएं, सैन्य शक्ति, बाह्य संबंध, विहंगम दृष्टि
.

***Corresponding Author**
Email: yadavcdnl[at]gmail.com

ABSTRACT

सामान्य शब्दों में विदेश नीति एक प्रक्रिया है। जिसमें कोई देश अपने हितों की सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों के साथ संबंध बनाते हुए करता है इसके लिए वह अन्य राज्यों के व्यवहार को बदलने तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में अपनी गतिविधियों को साम,दाम, दंड, एवं भेद के आधार पर संचालित करता है। भारत का सांस्कृतिक अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। यह न केवल पड़ौसी देशों के साथ अपितु दूर–दूर स्थित देशों के साथ भी सांस्कृतिक एवं व्यापारिक आदान–प्रदान करता रहा है। भारत की विदेश नीति के निर्माण में भी उन्हीं तत्वों का प्रभाव पड़ा है जो अन्य देशों की विदेशी नीतियों के निर्धारण में प्रभाव डालते हैं ऐसे तत्वों में कुछ स्थिर होते हैं है कि भारत की विदेश नीति का उसके आवश्यक परिवेशों में मूल रूप से विदेश नीति की जड़े अद्वितीय ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि राजनीतिक संस्थाओं, परम्पराओं, आर्थिक आवश्यकताओं, शक्ति कारकों, आकांक्षाओं विचित्र भौगोलिक परिस्थितियों और राष्ट्र के मान्य आधारभूत मूल्यों में पायी जाती है। बंदोपध्याय के अनुसार ''भूगोल, आर्थिक विकास, राजनीतिक परम्पराएं, सैन्य शक्ति, आन्तरिक और बाह्य संबंध और राष्ट्रीय चरित्र का मुख्य कारक मानते हैं। अतः विदेश नीति के संघटकों पर विहंगम दृष्टि डालना ही उचित है। इस वस्तुनिष्ट मूल्याकंन के पश्चात् बनी विदेश नीति सफल होती है। प्रकारांतर में कहा जा सकता है कि किसी देश की विदेश नीति की सफलता उसके निर्धारक तत्वों की वस्तुनिष्ट मूल्यांकन पर ही निर्भर करती है। जहाँ तक इन तत्वों की तुलनात्मक महत्ता का प्रश्न है, यह महत्ता समय काल और परिस्थिति के बदलते परिप्रेक्ष्य में घटती–बढ़ती रहती है।

दक्षिणी एशिया की 76 प्रतिशता आबादी भारत में रहती है। दक्षिण एशिया के कुल भूमि क्षेत्र का 73.25 प्रतिशत भारत में है। क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का अधिकांश भाग भारत के पास है। इसके प्रभुत्वशाली आकार और क्षमताओं, साझा ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक सम्पर्को ने हमेशा ही इसके पड़ोसियों के बीच पहचान के संकट की भावना पैदा की है जिससे भारत विरोधी भावनाओं का उभार हुआ है। विभिन्न शासकों ने बड़ी ही सुविधा से देश के सामने खड़ी समस्याओं की और से जनता का ध्यान भटकाने, सैनिक शासन के न्यायोचित ठहराने और क्षेत्रपारीय संबंधों की तलास के लिए इसका इस्तेमाल किया है। भारत की कुल आठ देशों, बांग्लादेश, भूठान, चीन, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ लगती हुई भूमि और समुद्री सीमा है। चार दक्षिण एशियाई देशों, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और पाकिस्तान के साथ इसकी साझा सीमा है। मालदीव और भूटान के अलावा इनमें से अधिकतर देशों के साथ इसके सीमा विवाद, नदी जल में हिस्सेदारी, सीमा पार संचालित और जातीय संघर्ष जैसे असुविधाजनक संबंध है। 1990 के दशक की शुरूआत में लुक ईस्ट पॉलिसी के विकास के बाद दक्षिण एशियाई देश भारत के विस्तारित पड़ोस के रूप में देखे जाते है।

भारत की पूर्वाभिमुख नीति और उसके सार्थक परिणामों की जो श्रृखंला आज दृष्टिगोचर हो रही है। उसने इस नीति की उपयोगिता ही सिद्ध नहीं की है अपितु इसकी व्यापकता का नया द्वारा भी खोल दिया है भारत तो सांस्कृतिक रूप से पूर्वी एशिया से प्राचीनकाल से ही जुड़ा है। गुप्त काल में जिस वृहत्तर भारत के इतिहास का उल्लेख होता आया है उसमें कम्बोज, मलयद्वीप, स्वर्णद्वीप आदि अनेक ऐतिहासिक नामों का उल्लेख आता है। आज यहीं द्वीप समूह नये नामों से अभिहित होते हैं जैसे–एशियान के सदस्य–थाईलैण्ड, लाओस, वियतनाम, कम्बोडिया, म्यांमार, मलेशिया, इण्डोनेशिया के साथ सिगांपुर, फिलीपींस ओर ब्रूनेई–भारतीय संस्कृति के अवशेषों से भरे पड़े हैं। ये सारे देश यूरोपीयनों के ही उपनिवेश रहे थे और भारत के साथ ही स्वतंत्र हुए थे परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व में जो सैनिक गुटों का आविर्भाव हुआ उसके परिणामस्वरूप अमेरिका और ब्रिटेन ने इन देशों की अनेक सैनिक संधियों से जोड़कर भारत से काट सा दिया था। ये देश भी भारत से कतराने लगे थे यद्यपि निर्गुट आंदोलन के माध्यम से इन देशों का संपर्क बना था परन्तु मूल रूप से ये देश ब्रिटेन और अमेरिका परस्त माने जाने लगे थे जबकि भारत को रूस परस्त (तत्कालीन सोवियत संघ) कहा जाता था अब शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत और इन देशों की आपसी झिझक समाप्त हुई और 1967 में बने एशियान को भी खुलकर अपनी नीतियों को विस्तार देने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज तो भारत के इन देशों के साथ द्विपक्षीय समझौतों के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

साथ 'एशियान' के साथ भी मुक्त व्यापार समझौता हो गया है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में भारत ने पूर्व की और देखों नीति को नये–नये आयाम दिये है। मोरे हताम, कलोवा मार्ग, भारत–म्यांमार थाईलैण्ड त्रिपक्षीय राजमार्ग, ट्रांस–एशियन राजमार्ग, भारत म्यांमार रेल सम्पर्क, स्टिल बेल राजमार्ग कालाउन मल्टी मॉडल परियोजना, भारत–बांग्लादेश म्यांमार गैस पाइप लाइन, पूर्वोत्तर भारत से होकर पूर्वी दक्षिण एशिया तथा पूर्वी एशिया तक ऑप्टिक फाइबर बिछाने की योजना आदि ऐसे कार्यक्रम और परियोजना है। जिनमें ''पूर्वी की और देखों नीति'' का एक अच्छा खाका तैयार हो सकता है।

वास्तव में लुक ईस्ट पॉलिसी (पूर्वोन्मुखी नीति) दूरदर्शी प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहा राव की महत्वपूर्ण देन है जिन्होंने 1991 से पाँच वर्ष के कार्यकाल के दौरान भारत की नियति को आकार देने की कोशिश की थी। यह सही समय पर सही दिशा में उठाया गया सही कदम था। यह 1990 के दशक के शुरू में भारत में शुरू किए उदारीकरण कार्यक्रम का स्वाभाविक परिणाम था। इस बात को कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि लुक ईस्ट पॉलिसी स्वतंत्र भारत के इतिहास की एक अद्वितीय नीति रही है। जिसके परिणामयुक्त नतीजे निकले है। देश की क्रमिक सरकारों ने इस नीति का अनुसरण किया। इससे लुक ईस्ट पॉलिसी की प्रभावशीलता और क्षमता जाहिर होती है। लुक ईस्ट पॉलिसी का जन्म घरेलू और बाहरी मोर्चो पर बाधाओं के कारण हुआ। नरसिंह राव के सत्ता में आने से पहले देश के समाजवादी प्रयोग और उसकी अनुदार आर्थिक नीतियों के कारण अर्थव्यवस्था के चरमराने के संकेत मिलने लगे थे। भारत के महत्वपूर्ण आर्थिक एवं रणनीतिक साझेदार सोवियम संघ के विघटन के बाद हमारा देश मित्रविहीन हो गया था और हाशिए पर चला गया था। पूर्व के राष्ट्र जिन्हें भारत ''अमरिकी साम्राज्यवाद का पिट्ठू कहते हुए खारिज कर देता था, नाटकीय आर्थिक सुधारों के जरिय अपनी जनता को अभूतपूर्व रूप से समृद्ध बना रहे थे। दरअसल, इन राष्ट्रों ने बहुत पहले आर्थिक सुधारों को अपना लिया था शीत युद्ध बाद की अवधि में विश्व के बदले हुए आर्थिक एवं रणनीतिक परिदृश्य ने भारत को अपनी विदेश एवं आर्थिक नीतियों की पुनर्समीक्षा के लिए बाध्य कर दिया। इन मुश्किल परिस्थितियों में भारत ने लुक ईस्ट पॉलिसी नामक एक बिल्कुल नई नीति की पहल करने का साहस किया।

लुक ईस्ट पॉलिसी का उद्धेश्य व्यापार एवं निवेश, राजनीतिक एवं रणनीतिक हितों को बढ़ावा देते हुए भारत और विस्तृत एशिया–प्रशांत क्षेत्र के बीच (इण्डो प्रशांत क्षेत्र यू.एस.ए. राष्ट्रपति द्वारा 31वें आसियान शिखर सम्मेलन 2017 में कहा गया) एक नए तरह का संबंध बनाना था। इस उद्धेश्य में भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) का इस्तेमाल मोर्चे के रूप में करना था। विस्तृत एशिया–प्रशांत क्षेत्र में दक्षिणपूर्व एशिया, पूर्व एशिया और ओसनिया आते है। लुक ईस्ट पॉलिसी राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने और एक सुसंगत राजनीतिक–आर्थिक और रणनीतिक एशियाई ढांचे के निर्माण में भारत को सक्षम बनाने की युक्ति थी। प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने 8 अगस्त 1994 को सिंगापुर में अपने ऐतिहासिक भाषण में एशिया प्रशांत क्षेत्र से 'निवेश और सहयोग' आमंत्रित करते हुए कहा, ''मैं इस सभा की भरोसा देता हूँ कि भारत न केवल आपके समय और पैसे का स्वागत करता है, बल्कि वह इसके योग्य भी है। भारत में निवेश भविष्य का निवेश है–वह भविष्य जो न केवल निवेशकों के लिए है बल्कि एक अरब जनता का भी है। यह जनता दुनिया में स्थिरता की ताकत बनी रहेगी। इसके एवज में, एशिया प्रशांत के देश भारत के रूप में एक विश्वसकीय देश एक विशाल बाजार पाएंगे। जिसके विकास की प्रक्रिया में एक महान उत्कृष्ट सभ्यता का पुनजार्गरण शामिल होगा। इस सभ्यता में हम सभी लोगों की कुछ न कुछ भागीदारी है।

हालांकि लुक ईस्ट पॉलिसी का लक्षित क्षेत्र समूचा एशिया प्रंशात था, लेकिन आसियान अपनी भौगोलिक समीपता साम्य संबंधों के कारण लुक ईस्ट पॉलिसी का आधार बनने का हकदार था। इसलिए आसियान को पूर्व में भारत का द्वार माना गया। भारत की रणनीतिक योजना में, एसियान को एनईआर के बाजारों को बाकी भारत और आसियान के साथ जोड़ने में एक बड़ी भूमिका भी निभानी थी। पूर्वोत्तर क्षेत्र के पूर्व केन्द्रीय विकास मंत्री मणिशंकर अययर ने ठीक ही कहा था, ''दक्षिणपूर्व एशिया पूर्वोत्तर भारत से शुरू होता है।'' एशियान भी भारत के साथ व्यावहारिक रिश्ते बनाने के लिए इच्छुक था और भारत को आसियान देशों के माल और सेवाओं के लिए एक अरब लोगों का विशाल बाजार खोलना था। सहयोग, प्रौघोगिकी और सुरक्षा सहायता के विश्वसनीय स्त्रोत भारत का चीन के प्रभाव के संतुलन के लिए वांछनीय और सभ्य कारक भी माना गया। एक–दूसरे से जुड़कर भारत और आसियान पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहते थे।

शीतयुद्ध की समाप्ति और भू–आर्थिक कारकों का बढ़ते महत्व ने भारत की विदेश नीति में आधारभूत परिवर्तन किए। इस व्यापक बदलाव ने घरेल स्तर पर जहां उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) के कार्यक्रमों को अपनाया वहीं भारत की 'लुक ईस्ट' (पूर्व की और देखों) की नीति का कारक भी बनी। यह नीति 1990 के शुरूआती दौर में आई और क्षेत्रीय संगठन आसियान द्वारा दक्षिण पूर्व एशिया की महत्व देने की कोशिश की। प्रारम्भिक चरण में यह मुख्य रूप से ऊर्जा और आर्थिक जरूरतों के कारकों से संचालित था। हांलाकि बाद में राजनीतिक और रणनीतिक पहलू भी इनमें जुड़ गए। परिणामस्वरूप, भारत 1992 में आसियान का 'सेक्टोरल डायलॉग पार्टनर' बना फिर 1995 में आसियान क्षेत्रीय फोरम (एआरएफ) का सदस्य बना और 1996 में आसियान का ''फुल डॉयलॉग पार्टनर'' बना। बाद में, इन संबंधों में मजबूती की पराकाष्ठा 2002 में भारत और आसियान के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन के रूप में फलीभूत हुई।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इसके अलावा, भारत ने सिंगापुर और थाइलैण्ड जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) करने के बाद आसियान समूहों के साथ मुक्त व्यापार (समझौतों को अंतिम रूप दिया)

लुक ईस्ट की नीति के दूसरे चरण में, भारत दक्षिण–पूर्व एशिया और आसियान के साथ व्यापारिक व संस्थागत संबंधों में इजाफे से आगे बढ़ा, जैसा कि विदेशी मामलों के मंत्रालय के 2003–04 के वार्षिक रिपोर्ट में दृष्टिगत होता है। नतीजा कि इस नीति का विस्तार दक्षिण–पूर्व एशिया से आगे आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड समेत प्रशांत क्षेत्र में हुआ। इसे आगे पूर्वी एशिया में बढ़ाते हुए भारत ने कोरिया, जापान व चीन के साथ संबंद्ध किया और अपने आर्थिक रिश्ते मजबूत किए। भारत की वार्षिक ईस्ट एशिया समिट (ईएएस) में भागीदारी 1033 (आसियान) भारत, न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया (दक्षिण कोरिया, जापान व चीन) के रूप में भागीदारी एक वृहत्तर आर्थिक समूह के निर्माण की कोशिशों की और इशारा करता है। भारत ने आर्थिक क्रियाकलापों की इस क्षेत्र से बाहर ले जाने में यर्थाथवादी दृष्टिकोण अपनाया है। दक्षिण एशिया में साफ्टा द्वारा मुक्त व्यापार के लक्ष्य के क्रियान्वयन नहीं होने के बाद भारत ने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच अंतरक्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के निर्माण के लिए प्रयाास किया। इस उद्धेश्य के लिए दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ देशों को सम्मिलित करके बिम्सटेक का गठन किया गया जिसे बाद में बंगाल की खाड़ी की पहल की संज्ञा दी गई। दरअसल इसका मूल उद्धेश्य दक्षिण एशिया के उभरते आर्थिक सहयोग में परेशानी का कारक बनने वाले पाकिस्तान को इससे दूर रखना था। इसके अलावा इसे एक समूह के रूप में देखा गया जो कि दोनों दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया को देखें।

भारत एवं एशियान देशों के बीच संबंधों को सुधारने का सर्वप्रथम प्रयास पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉ. सुकर्णो के साथ मिलकर किया था। परन्तु सैनिक गुटों का विभाजन होने के कारण वह प्रयास सफल न हो सका था परन्तु शीतयुद्ध काल की समाप्ति के बाद इस प्रयास में काफी सफलता मिली है। भारत ने एसियान देशों की ही नहीं, जापान और आस्ट्रेलिया की भी विश्वसनीयता प्राप्त कर ली है। भारत की पूर्व की और देखो नीति का एक और पड़ाव मिकांग गंगा को–आपरेशन (MGC) है। यह सहयोग संधि मीकांग नदी द्वारा लायी गयी मिट्टी से निर्मित देशों, थाईलैण्ड, म्यामांर, कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम को गंगा की धरती अर्थात भारत से जोड़ना है। जो बांग्लादेश से भी होकर गुजर सकता है। यह संगठन 2000 में बना था इस संधि के अन्तर्गत धार्मिक सांस्कृतिक, व्यावसायिक और पर्यटन एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना है। इसके अंतर्गत म्यांमार होकर गंगा–मीकांग राजमार्ग का निर्माण करने की व्यवस्था है जो कि भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से म्यांमार होती हुई वियेन–तियेन (वियतनाम) तक जायेगी।

आज भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी लगभग दो दशक पुरानी हो चुकी है। इस दौरान, भारत को एशिया प्रशांत क्षेत्र में लुक ईस्ट पॉलिसी से कई आर्थिक रणनीतिक और राजनीतिक फायदे हुए। लुक ईस्ट पॉलिसी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारत का प्रदर्शन अच्छा रहा। लेकिन इस अवधि में उसकी तुलना में एसिसान के साथ चीन की उपलब्धि कहीं अधिक काबिले तारीफ है। अगर हम पूरी स्थिति का विश्लेषण करें तो हम भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी के प्रतिपादन के भीतर कुछ अवरोधों के साथ–साथ कुछ बड़ी प्रमुख बाधाएं भी पाएंगे जिनका सामना नई दिल्ली ने किया। ये अवरोध क्षेत्रीय और क्षेत्रीयेतर शक्तियों से पैदा हुए थे, जिनके कारण लुक ईस्ट पॉलिसी अपनी सम्पूर्णता में अधिक प्रभावी नहीं हो पाई परिणामतः भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अगस्त 2014 में वियतनाम की यात्रा के दौरान आधिकारिक तौर पर एक्ट ईस्ट नीति का खुलासा किया जो लुक ईस्ट का फिर से तैयार और फिर से सक्रिय अवतार थी उन्होंने जब घोषित किया कि अब यह समय केवल देखने का नहीं बल्कि काम करने का है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार के तहत हम एक एक्ट ईस्ट नीति पर काम करेंगें –

दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के साथ भारत पूर्व की और देखों नीति से एक्ट ईस्ट की और संक्रमण कर गया है, भारत की विदेश मंत्री ने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ सक्रिय नीति अपनाने पर बल दिया और इसे एक्ट ईस्ट नाम दिया। जीवंत एशिया के दोनो विकास धुरियों के बीच सभी क्षेत्रों में संलग्नता के नये स्तर तक ले जाना है । मोदी सरकार के डेढ़ वर्षों में ही द्विपक्षीय यात्राओं की निरन्तरता से यह नीति जमीन पर भी उतरती दिखायी दी। अपनी सिंगापुर यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने कहा कि पूर्व की और देखों अब पर्याप्त नहीं है। बल्कि एक्ट ईस्ट, की जरूरत है। म्यांमार में आयोजित 12वें भारत, आसियान शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आसियान के साथ संबंधों को मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा कि देश की लुक ईस्ट पॉलिसी अब एक्ट ईस्ट पॉलिसी में तब्दील हो चुकी है उन्होनें म्यामांर के साथ भारत की ऐतिहासिक विरासत का विशेष रूप से उल्लेख किया। म्यामांर दक्षिण पूर्व एशिया में भारत का प्रवेश द्वार है। आसियान के साथ क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने के लिए भारत–म्यांमार–थाईलैण्ड एक त्रिपक्षीय हाइवे बिन्दुओं को शामिल किया गया है। सरकार द्वारा देश के भीतर बौद्ध तीर्थ सर्किट को विकसित किया जा रहा है। ताकि अधिकाधिक दक्षिण पूर्व एशियाई पर्यटक को आकर्षित किया सके। तथा उ. पू. राज्यों में आधारभूत संरचना के विकास पर प्रमुख बल दिया जा रहा है। तभी उ.पू. राज्यों को आसियान के साथ क्षेत्रीय सम्पर्क बढ़ाने के लिए भारत म्यांमार थाईलैण्ड एक त्रिपक्षीय हाइवे विकसित किया जा रहा है। भारत–म्यामांर–थाईलैण्ड के बीच 3200 किमी लम्बे हाइवे का निर्माण हो रहा है उत्तर पूर्व के मोरोह (मणिपुर) से शुरू हो कर मेसोट (थाईलैण्ड) तक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इसका विस्तार है। यह 2018 तक पूरा होने की संभावना है। इससे द.पू. एशियाई देशों तक सड़क मार्ग से भारत का सम्पर्क होगा। माल और कंटेनर ट्रकों में सीमा से आवागमन का रास्ता साफ होगा। व्यापार ओर निवेश बढ़ेगा। रोजगार सृजन होने के साथ लोगों के बीच सम्पर्क होगा वर्ष 2000 में गंगा–मेकांग परियोजना के द्वारा वियतनाम लॉओस, योजनाओं के निर्माण पर बल दिया जा रहा है तथा म्यांमार के सितवे पतन के साथ भारत को जोड़ने की योजना को क्रियान्वित करने पर बल दिया गया है। म्यांमार के साथ सुदृढ़ संबंध है। 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि म्यांमार, आसियान का प्रवेश द्वारा है, तथा भारत–म्यांमार के बीच मधुर एवं सांस्कृतिक संबंध पहले से बने हुए है। इसलिए एक्ट ईस्ट नीति के अन्तर्गत उत्तरी पूर्वी राज्यों के विकास पर मूल बल दिया जा रहा है और स्थानीय लोगों के विकास के बिना ''पूर्व की और देखों' की नीति सफल नहीं हो सकती है। उत्तरी–पूर्वी राज्यों में सिक्किम, मिजोरम, मेघालय और कुछ हद तक त्रिपुरा के अलावा अन्य सभी राज्य उग्रवाद से पीड़ित है। विशेष तौर पर असम व मणिपुर उग्रवाद से अत्यधिक प्रभावित है और आन्तरिक असुरक्षा के विद्यमान होते हुए उस क्षेत्र का आर्थिक विकास संभव नहीं है।

''एक्ट ईस्ट नीति'' के द्वारा दक्षिण कोरिया जैसे पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंध पर महत्वपूर्ण बल दिया जा रहा है तथा आस्ट्रेलिया के साथ संबंधों को भी केन्द्रीय महत्व दिया जा रहा है। इसलिए प्रधानमंत्री के द्वारा आस्ट्रेलिया जापान तथा दक्षिण कोरिया की यात्रा की गई। इस नीति के द्वारा इन देशों के साथ सामरिक संबंधों के विकास को भी महत्व दिया जा रहा है और प्रधानमंत्री की आस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान (2014) भारत और आस्ट्रेलिया के मध्य सुरक्षा और सहयोग के फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर हुए तथा वर्ष 2015 में भारत–आस्ट्रेलिया के बीच पहले नौ सैनिक अभ्यास की घोषणा की गई। जापान के साथ हथियारों की खरीद के अलावा आतंक के विरूद्ध सहयोग तथा समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग पर समझौते हुए है। इसलिए एक्ट ईस्ट नीति में पूर्व की और देखो की नीति को ही प्रभावी रूप में क्रियान्वित करने पर बल दिया जा रहा है तथा दोनों के बीच में कोई गुणात्मक अन्तर नहीं है, बल्कि पहले की मान्यताओं को व्यवहार में लाने पर बल दिया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत अभी भी एपेक का सदस्य नहीं है तथ चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, आसियान+3 के भाग हैं भारत का इसमें भी प्रतिनिधित्व नहीं है एक महाशक्ति की क्षमता रखने वाले देश का प्रभाव अपने निकट के क्षेत्रों पर होना चाहिए, इसलिए पूर्व की और देखों की नीति को 'एक्ट ईस्ट नीति' में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। भारत की एक्ट ईस्ट नीति तथा जापान व आस्ट्रेलिया के साथ निकटता वस्तुतः दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास है। ऐसा अमेरिकी थिंक टैंक मानते है। चुंकि चीन क्षेत्र में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा रहा है और दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा करने वाले देश चीन की बढ़ती उपस्थिति की और उन्मुख हो रहे है।

निष्कर्ष

भारत की एक्ट ईस्ट नीति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा आधारिक संरचना संपर्क का अभाव है। हालांकि दोनों क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक व वाणिज्यिक संबंध है। परन्तु आधारित संरचना संपर्क का नहीं होना प्रमुख बाधा है। इस दिशा में कई प्रयास किये जा रहे है। भारत–म्यांमार थाइलैण्ड त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना पर काम चल रहा है जो मणिपुर के मोरेह से म्यामांर के मांडले होते हुये थाईलैण्ड के माए सोत तक जाएगी इसी प्रकार कालादान परियोजना के द्वारा मिजोरम के लॉवंगतलाई के म्यांमार के सितवें बन्दरगाह को जोड़ा जाएगा। इसके अलावा म्यांमार से संपर्क बढ़ाने तथ व्यापार बढ़ाने के लिए रिह–तिदिम व रिह फलाम सड़क परियोजनाओं पर काम चल रहा है। बांग्लादेश–चीन–भारत–म्यांमार आर्थिक गलियारा इन चारों देशों को जोड़ेगी। दक्षिण एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया के बीच कोई रेल संपर्क नहीं है। एक बार इन क्षेत्रों के बीच सड़क सम्पर्क स्थापित हो जाता है। तो ट्रांस एशियन रेल्वे दिल्ली हनोई के बीच रेल सम्पर्क बहाल कर सकती है।

सन्दर्भ

1. सिंह प्रो. स्वर्ण, ''इण्डिया चाईना रिलेशन इन द फर्स्ट हाफ ऑन द टेवंटी सेंन्चुरी, ए.पी. एच. पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. पंत प्रो. पुष्पेश (अन्तर्राष्ट्रीय संगठन), टाटा मेग्रा हिल्स, नई दिल्ली
3. निर्माण आई.ए.एस.,सामान्य अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एवं संगठन
4. वर्ल्ड फोकस, विशेषांक दिसंबर 2015, पृ.सं.
5. परीक्षा मंथन, ईयरबुक (ब) पृ.सं.
6. क्रोनिकल सिविल सर्विसेज नवम्बर 2015 पृ. सं.
7. राजेश मिश्रा भारत की विदेशनीति एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंध
8. दैनिक भास्कर, संपादकीय
9. दैनिक जागरण, संपादकीय
10. www.gyanganga.com
11. अग्रवाल डॉ.एस.एम. ''अर्न्राष्ट्रीय संबंध'' आशा पब्लिकेशन 2010

RRIJM 2015, All Rights Reserved